परिशिष्ट

परिशिष्ट - 1

असगर वजाहत का संक्षिप्त जीवन-वृत्त

संप्रति - अध्यक्ष, ए. जे. के. किडवाई जनसंपर्क शोध-केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय (जे. एम्. आय.), नई दिल्ली - 110 025.

पूर्व पद - प्रभारी समन्वयक, ए. जे. के. एम्. सी. आर. सी.। प्राध्यापक, हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

विदेशी मूल्यांकन - सहाय्यक प्राध्यापक, भारत-पाश्चात्य अध्ययन अधिविभाग, बुदापेस्ट (हंगेरी)।

शिक्षा - एम्. ए., पीएच्. डी. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, भारत। पोस्ट डॉक्टोरल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली (1980-1983).

अध्यापन और शोध-मार्गदर्शन -

तीस साल का अध्यापन अनुभव। उनके मार्गदर्शन में आठ छात्रों ने पीएच्. डी. उपाधि प्राप्त की है।

प्रकाशित एवं सृजनात्मक लेखन -

अनेक पुस्तकें प्रकाशित- उसमें समीक्षा, कहानी, उपन्यास, सात पूर्णकालिक नाटक, नुक्कड़ नाटक संग्रह आदि का समावेश है। उनकी कहानियाँ भारत की विविध भाषाओं में अनुदित एवं प्रकाशित। कई अंग्रेजी कविताओं का अनुवाद। उनकी कहानियाँ रशियन, इटालियन, हंगेरीयन आदि पाश्चात्य भाषाओं में भी अनुदित और प्रकाशित हुई हैं यह कार्य 'सेंट्रो-डी-स्टुडिओ-डे-डाक्युमेंटेशन, युनिव्हर्सिटा डेगली-स्टुडिओ-डे वेनेझिया' ने 1987 में किया है। उनके सभी नाटक संपूर्ण भारत में रंगमंच पर प्रस्तुत हुए हैं। उनके नाटक रंगमंच पर लानेवालों में हबीब तन्वीर, एम्. के. राइना, कविता नागपाल और अनिल चौधरी आदि दिग्गज दिग्दर्शकों का समावेश होता है। उनका 'जिस लाहौर....' नामक नाटक 1991 में खालिद अहमद द्वारा पाकिस्तान

(कराची) और 1992 में उमेश अग्निहोत्री द्वारा अमरीका (वॉशिंग्टन) के रंगमंच पर प्रस्तुत हुआ है। इस नाटक पर मशहूर फिल्म निर्माता गोविंद निहलानी फिल्म बना रहे हैं।

फिल्म-टी. व्ही. दिग्दर्शन और लेखन -

1984 में 'उर्दू गझल का प्रवाह' इस विषय पर 16 एम्. एम्. रंगीन वृत्तचित्र का 20 मिनट तक दिग्दर्शन। 1990 में 'बूँद-बूँद' इस दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के साथ अन्य कई फिल्म की पटकथाएँ भी लिखी हैं। सामाजिक और संस्कृति के विषय में अनेक वृत्तचित्रों का लेखन। 1989 में 'सरदार भगत पुराणसिंग' जो एक सामाजिक, पर्यावरणवादी और अमृतसर (पंजाब) में अपाहिज लोगों के लिए अस्पताल खुलवानेवाला कार्यकर्ता था, जिसपर एक वृत्तचित्र का निर्माण किया है। इसके साथ ही मध्यप्रदेश में हुए कामगार आंदोलन के प्रमुख नेता समाजसुधारक शंकर गुहा नेयोगी पर भी एक वृत्तचित्र का निर्माण किया है। ये दोनों भी चरित्र आकाशवाणी पर 1991 में प्रसारित हुए थे। 1986 में 'आगमन' फिल्म के लिए संवाद लेखन। 'आगमन' फिल्म कई गावों में हुए सहकारी आंदोलन पर आधारित थी। सन् 2003 में दूरदर्शन पर प्रसारित चरित्र 'खोया बचपन' का दिग्दर्शन।

स्वेच्छा-कार्य-

राष्ट्रीय कामगार संस्था द्वारा आयोजित एफ्. ए. ओ. कार्यक्रम के अंतर्गत कई आदिवासी गाँवों में हुए सुधार योजनाओं के प्रभाव की जाँच करने के लिए परियोजना का आयोजन रिसोर्स सेंटर में प्रौढ़ शिक्षा के लिए कई नुक्कड़ नाटकों का लेखन। प्रौढ़ शिक्षा पर आधारित कई चरित्र फिल्मों का लेखन। सांप्रदायिक सद्भाव, आदिवासी समाज-सुधार या जातीय संघर्ष जैसे संवेदनशील कार्य के लिए संस्था, कार्यक्रमों द्वारा बड़ा योगदान। अनेक कार्यक्रमों में नाटककार, फिल्म निर्माता के रूप में सहयोग। रिसोर्स सेंटर, दिल्ली के सहयोग से रिक्षा-चालकों में शिक्षा प्रसार होने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन। मध्य प्रदेश राज्य सरकार से मिलकर आदिवासी जनजातियों के आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति के वर्णन पर आधारित कई रिपोर्ट लिखे जो सन् 1984 में प्रकाशित हुए हैं। इ. स. 1991 में तगवातई-फिलीपाईन्स में आयोजित 'एशियन एण्ड साऊथ पॅसिफिक ब्युरो ऑफ अडल्ट एज्युकेशन' की सभा में भारत का प्रतिनिधित्व। राष्ट्रीय

कामगार संस्था (भारत) आयोजित कई कार्यक्रमों में सहभाग। रांची (बिहार) में आदिवासियों के लिए चलाई 'सिंगारी' नामक परियोजना उल्लेखनीय है।

वे अब तीन फिल्मों की पटकथा लिखने में व्यस्त हैं, जो गोविंद निहलानी दिग्दर्शित करनेवाले हैं।

यात्राएँ -

अमरीका, ब्रिटन, फिलिपाइन्स, हाँगकाँग, ऑस्ट्रिया, फ्रेंच प्रजासत्ताक, जर्मनी, फ्रान्स, नेदरलँडस्, इटली और रूमानिया।

सम्मान तथा पारितोषक -

- संस्कृति सम्मान - संस्कृति प्रतिष्ठान, दिल्ली, 1978.
- सांप्रदायिक सद्भाव पुरस्कार- सोसायटी फॉर अंडरस्टैंडींग एण्ड फ्रेटर्निटी द्वारा, 1992.
- हिंदी-उर्दू एवार्ड कमेटी - लखनऊ द्वारा सम्मानित, 1992.
- अध्यक्ष - जनवादी लेखक संघ, दिल्ली.
- सदस्य - कार्यकारिणी मंडल, हिंदी अकादमी, दिल्ली, 1990-1992
- उत्कृष्ठ नाट्य-लेखक पुरस्कार - भुवनेश्वर नाट्य संस्थान - 1995
- वनमाली पुरस्कार - भोपाल, 2000
- साहित्यकार सन्मान - दिल्ली हिंदी अकादमी
- अध्यक्ष - कार्यकारिणी मंडल, मैत्रेयी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- सदस्य - कार्यकारिणी मंडल, जनसंपर्क शोध-केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली।
- सदस्य - अभ्यास मंडल, उर्दू विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली।
- सदस्य - अभ्यास मंडल, अंग्रेजी तथा आधुनिक पाश्चात्य अभ्यास, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली।
- सदस्य - अभ्यास मंडल, मानव्यशास्त्र स्कूल, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- सदस्य - अभ्यास मंडल, हिंदी विभाग, कुमांव विश्वविद्यालय, नैनिताल।
- सदस्य - अभ्यास मंडल, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

प्रकाशित लेखन -

1. 'अंधेरे से' (कहानी संग्रह), भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977.
2. 'हिंदी कहानी पुनर्मूल्यांकन' (समीक्षा), भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979
3. 'दिल्ली पहूँचना है' (कहानी संग्रह), प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 1981
4. 'आखिरे शब के हमसफर' (करर्तुल ऐन हैदर के उपन्यास का अनुवाद), ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली - 1982
5. 'हिंदी-उर्दू की प्रगतिशील कविता' (समीक्षा), मैकमिलन इंडिया लि., 1981.
6. 'इन्ना की आवाज' (नाटक), प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 1986.
7. 'वीरगति' (नाटक), वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1988.
8. 'स्विमिंग पूल', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1990.
9. 'बूँद-बूँद' (दूरदर्शन धारावाहिक लेखन), राधाकृष्ण प्रकाशन, 1990
10. 'सबसे सस्ता गोश्त' (नुक्कड़ नाटक संग्रह), गगन भारती प्रकाशन, दिल्ली, 1990
11. 'ओ जन्म्या ही नई' (नाटक), दिनमान प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
12. 'सब कहाँ कुछ' (कहानी संग्रह), किताब घर, नई दिल्ली, 1991.
13. 'सात आसमान' (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996.
14. 'सिनेमा के बारे में' (अनुवाद), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. 'पाँच नाटक' (पाँच नाटकों का संग्रह), प्राची प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995.
16. 'आधी बानी' (कहानी संग्रह), प्रविण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001.
17. 'अकी' (नाटक), रत्नकेतन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002.

परिशिष्ट – 2

साहित्यकार असगर वजाहत की लिखावट

(शोध-निर्देशक गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी के नाम लेखक असगर वजाहत का पत्र)

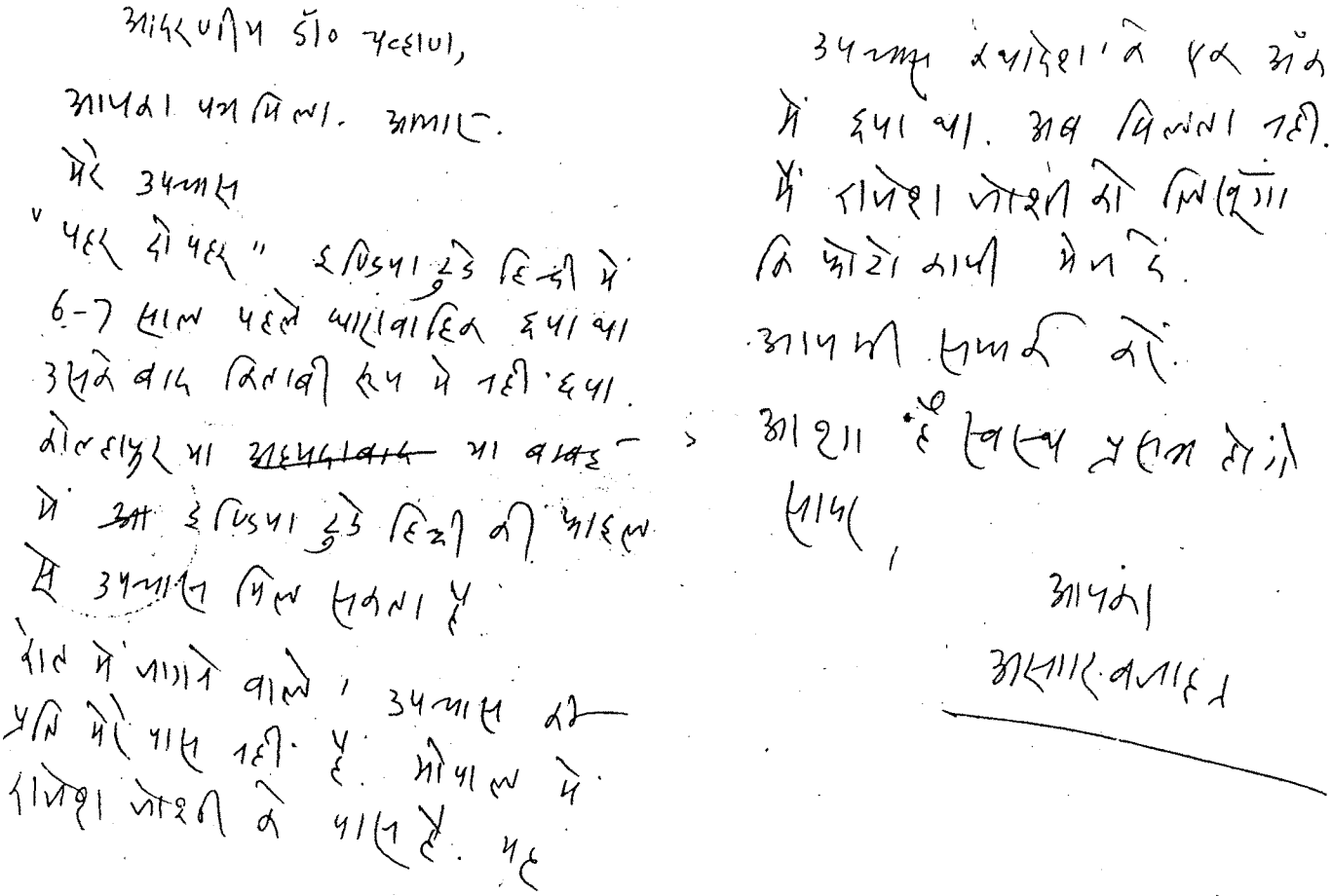

आदरणीय डॉ० चव्हाण,

आपका पत्र मिला. आभार.

मेरे उपन्यास "पहर दोपहर" इण्डिया टुडे हिन्दी में 6-7 साल पहले धारावाहिक छपा था उसके बाद किताबी रूप में नहीं छपा. कोल्हापुर या ~~अहमदाबाद~~ या बम्बई में ~~आ~~ इण्डिया टुडे हिन्दी की फाइल से उपन्यास मिल सकता है.

'रात में जागने वाले' उपन्यास की प्रति मेरे पास नहीं है. भोपाल में राजेश जोशी के पास है. यह उपन्यास 'स्वदेश' के एक अंक में छपा था. अब मिलता नहीं. मैं राजेश जोशी को लिखूँगा कि फोटो कापी भेज दें.

आपकी सफलता की.

आशा है स्वस्थ प्रसन्न होंगे

सादर,

आपका

असगर वजाहत